लोक कथा और नीतिकथा—

कथा-साहित्य का विकास दो दृष्टियों से हुआ—

(क) शुद्ध मनोरंजन के लिए - वे लोककथाएँ कही जाती हैं।

(ख) कुछ कथाएँ सामान्य लोगों को नैतिक-धर्म-उपदेश के लिए विकसित हुईं, उन्हें नीतिकथा कहते हैं। इन कथाओं में प्रायः पशु-पक्षियों की बुद्धिमत्ता से सामान्य मनुष्य को भी सीख मिलती है - इन्हें 'पशुकथा' भी कहते हैं। ये कथाएँ सरल संस्कृत में लिखी गयी हैं।

'कथा' का बीज वैदिक वाङ्मय के पुरुरवा - उर्वशी संवाद, सरमा - पणि - संवाद, विश्वामित्र - नदी - संवाद आदि से ही मिलता रहा है। निरुक्त (वैदिक व्याकरण की पुस्तक या कोश) में यास्क ने कई स्थलों पर 'अत्रेतिहासमाचक्षते' कहकर सत्यकथाएँ प्रस्तुत की हैं। उपनिषदों में जीव-जन्तुओं की कथाएँ कुछ विशिष्ट उद्देश्य से गई - जैसे कुत्तों द्वारा अपने नेता का चुनाव (छान्दो० - 1।12।2), दो हंसों के वार्तालाप से ऐक्य का ध्यान दूटना (छान्दो० 4।1), जबाला-पुत्र सत्यकाम को बैल, हंस तथा मधु द्वारा उपदेश मिलना।

महाभारत तथा पुराणों में तो कथाओं का अम्बार है। बौद्ध जातक कथाओं में 550 की संख्या, जैनों ने भी अपनी कथा-साहित्य का पर्याप्त विकास किया है। लोककथाएँ मुख्यतः गुणाढ्य रचित पैशाची ग्रंथ 'बृहत्कथा' (प्राकृत में बड्डकहा) पर आश्रित हैं।

(1) बृहत्कथा - एक लाख श्लोकों की 'बृहत्कथाएँ' पैशाची भाषा में पशु-पक्षियों को गुणाढ्य द्वारा सुनायी गयी कथाएं हैं। इस समय 'बृहत्कथा' उपलब्ध नहीं है। इसमें एक मुख्य कथा कौशाम्बी नरेश उदयन के पुत्र नरवाहन दत्त

Scanned with CamScanner

की थी, जिसने विद्याधर राजकुमारी मदनमञ्जुका से विवाह किया। इसके अतिरिक्त अन्य अवान्तर कथाएँ भी थीं। बाद में शिव-पार्वती की कथा को जोड़कर इसे पौराणिक रूप दिया गया।

'बृहत्कथा' की तीन वाचनाएँ इस समय उपलब्ध हैं+

① बृहत्कथाश्लोक संग्रह - यह नेपाली वाचना का एकमात्र प्रतिनिधि ग्रंथ है, इसके 28 सर्ग प्राप्त हुए हैं, जिनमें 4539 श्लोक हैं। इसमें मुख्य कथा नरवाहन दत्त की है जो चतुर्थ सर्ग से आरंभ होती है। मूलकथा को काव्यरूप देने का कवि ने प्रयास किया है।

भाषा का प्रवाह संयतमय है एवं सरल शैली - ये कथा के वैशिष्ट्य हैं।

② बृहत्कथामंजरी - यह अठारह लम्बकों में विभक्त प्रायः सात सहस्र पद्यों का ग्रंथ है। लम्बकों के नाम हैं - कथापीठ, कथामुख, लावानक, नरवाहन जन्म, चतुर्दारिका, सूर्यप्रभ, मदनमंचुका आदि। पट्टमहिषी मदनमंचुका (कलिंगराजकुमारी) है किन्तु नायक अनेक गन्धर्वसुन्दरियों से विवाह करता है। जिनमें जहाँ-तहाँ कवि ने देवस्तुतियाँ दी हैं जिनमें एक है - 'नारायणस्तुति' (15/198 के बाद) जो 13 पंक्तियों के सरल-क्लिष्ट गद्य में है।

③ कथासरित्सागर - बृहत्कथा का यह अर्वाचीनतम और विशालतम संस्कृत-संस्करण है। इसकी रचना कश्मीरी पंडित सोमदेव ने कश्मीरी नरेश अनन्त की पत्नी सूर्यवती के मनोविनोदार्थ 1064 और 1081 ई० के बीच की थी। यह 18 लम्बकों में विभक्त है। इसमें 21,388 श्लोक हैं। उस ग्रंथ के विस्तार के कारण कथाओं की समुचित रोचकता सुरक्षित है।

01.07.20

Uma Pathak
Deptt. of Skt
B.A. 1st Yr. | III Yr.